आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025

Received: 14/04/2025; Accepted: 21/04/2025; Published: 28/08/2025

लेख

राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत हिन्दी (एक विचार)

डॉ. नागरत्ना एन राव

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

विश्वविद्यालय कॉलेज

मंगलौर (कर्णाटक)

डॉ. नागरत्ना एन राव, राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत हिन्दी- (एक विचार), आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(195 -197) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072715

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

'हिन्दी' बहुभाषी भारत की संपर्क भाषा है जो भारत की पहचान है। आज यह भारत की ही नहीं विश्व की एक सशक्त भाषा के रूप में उभर रही है। भारत के अलावा हिन्दी कई देशों मे बोली, समझी, पढ़ी और पढाई जाती है जैसे फिजी, मारीशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल, यूरोप ,अरब, जापान, चीन, आबुदाबी, संयुक्त राष्ट्र अमरीका आदि। भारत की अन्य सभी भाषाओ क्षेत्रीयता की भावना प्रबल है तो हिन्दी में भारतीयता का भाव है, राष्ट्रीयता की प्रेरणा है। कई सामाजिक सांस्कृतिक कारणो से हिन्दी स्वतः निर्मित भाषा है जिसने अपने संपर्क में आई कई भाषाओं के शब्दों को ग्रहण कर अपना बना लिया। तभी हिन्दी विश्वभर में बोली और समझी जाती है।

आज तक इस विषय पर काफी शोध हुए कि विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा कौन सी है-? तब सब ने हिन्दी को दूसरा, तीसरा या चौथा स्थान दिया। लेकिन वर्तमान में हिन्दी केवल संपर्क या साहित्य की भाषा नहीं बल्कि 'रोजीरोटी-' की भाषा बन गई है। इसमें निहित राष्ट्रीयता की भावना और वैश्विकता के स्वरूप से प्रभावित हो डोजयंती प्रसाद नौटियाल ने पिछले चार दशकों से अध्ययन कर अपने अ-काट्य तथ्यों एवं प्रमाणों के साथ हिन्दी की विशिष्टता को सिद्ध करते हैं। हिन्दी भाषा सर्वेक्षण' में नौटियालजी ने बड़ी बारीकी से इसकी बोलियों उपबोलियों को सम्मलित करते हुए हिन्दी को विश्व में सर्वाधिक बोली -

जाने वाली भाषा के रूप में प्रमाणित करते हैं। हिन्दी को लेकर लोगों में जोभी संदेह है वे उसकी पुष्टि करते हुए समाधान भी देते हैं। उन्होंने व्यवस्थित सर्वेक्षण कर सुधी विशेषज्ञों के मत लेकर इस तर्क को प्रमाणित किया है। नौटियालजी ने बड़ी सूझबूझ और दक्षता से विभिन्न दृष्टान्तों के द्वारा अपनी बात रखी है जिसे- कोई नकार नहीं सकता। नौटियाल जी अपनी इस रिपोर्ट में हिन्दी के नामकरण प्रयोग आदि संदेहों की पुष्टि करते हैं। हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी को लेकर सभी शंकाओं का समाधान करते हैं। स्वतंत्रता पूर्व और स्वातंत्र्योत्तर काल में हिन्दी की स्थिति, दशादिशा को ब्योर-ेवार प्रस्तुति देते हैं। हिन्दी की वैश्विक प्रयुक्ति को प्रमाणित करते हैं। आज का युग विपरीतों का युग है, प्रमाण पत्रों का युग है। हर कार्य को प्रमाणित करने के लिए साक्ष्य मांगे जाते हैं। इसलिए नौटियालजी ने तमाम आंकडों के साथ समर्थन किया है कि हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। अब तो भारत के अलावा विश्व के 150 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ा और पटाया जाता है। विदेशों में 25 से अधिक पत्रपत्रिकाएँ हिन्दी में प्रकाशित होती है। इतना - ही नहीं2016 में विश्व के आर्थिक मंच पर 10 सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी एक है। कोर भाषाओं के वेबसाइट पर जिन 10 भाषाओं का जिक्र है उसमें भी हिन्दी एक है। 2017 में कोरिया के अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका में हिन्दी सीखने के लिए सबसे पहली उपयुक्त भाषा माना गया है। 2018 में संयुक्त राष्ट्र से साप्ताहिक हिन्दी समाचार बुलेटिन निकला । 2019 में अबू दाबी में न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में स्वीकार की गई। विश्व भर में भारतीय फैले हुए हैं और वे जहां भी जाते हैं अपने साथ भगवद्गीता, रामचरितमानस ले जाते हैं। इससे भारतीय संस्कृति का प्रसार हिन्दी के माध्यम से ही हो रहा है। बॉलीवुड में बनने वाली फिल्में और गाने भी अधिक सुनेसुनाये जाते हैं। इन सभी तथ्यों से यही पता चलता है कि - हिन्दी की चुम्बकीय शक्ति सब को अपनी ओर खींचती है। हिन्दी से ही भारत और विश्व एक हो सकता है।

यदि कोई इसे विवादास्पद या नकारात्मक मानता है तो वह निश्चित ही किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित है। अब तो हम सब भारतीयों को यह स्वीकार करना होगा कि हिन्दी अधिक से अधिक लोग बोल और समझ लेते हैं। भारत बहुभाषाओ से समृद्ध देश है। यहां की प्रत्येक भाषा का अपना इतिहास व साहित्य है। लेकिन हर भाषा के साथ क्षेत्रीयता का भाव है जैसे कन्नड़ से कर्नाटक, तमिल से तमिलनाडु, मराठी से महाराष्ट्र किन्तु जब हम हिन्दी कहते हैं तो उसमें भारत समाया है और उससे भारतीयता की भावना जागृत होती है। हिंदी के इसी राष्ट्रीय स्वरूप को देख महात्मा गांधीजी ने कहा था -' यदि भारत की कोई एक राष्ट्रभाषा हो सकती है तो वह हिंदी है।' वे मानते थे कि हिन्दी भाषा के आधार पर ही भारत में एकता लायी जा सकती है। हम भारतीय जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा, क्षेत्र में बटे हुए हैं और हर कोई पूर्वाग्रही है। इस कारण यदि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाया जाए तो यह देश कम से कम भाषा की दृष्टि से एक हो सकता है। पर हमारे राजनेता कभी अपने स्वार्थ के ऊपर सोच न सके और आज तक हम अपनी एक राष्ट्रभाषा की घोषणा नहीं कर सके। जबकि सबका अंतर्मन इस बात से अवगत है कि हिन्दी सब बोल और समझ सकते हैं।

महात्मा गांधीजी ने भाषा की दृष्टि से भारत को एकसूत्र में बांधने की दिशा में चैन्नई में दक्षिण (मद्रास) भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की।'हिन्दी', उत्तर भारतीयों की मातृभाषा है तो दक्षिण भारतीयों की अर्जित भाषा। हम स्वयं हिन्दीतर भाषी क्षेत्र के हिन्दी अध्येता है। पिछले तीस वर्षों में हमने देखा है कि हिन्दी बोलनेवालों की संख्या सबसे अधिक है। इसे सीखने और बोलने के लिए साक्षर या शिक्षित होना आवश्यक नहीं। हिन्दी हृदय की भाषा है, जन-मन की भाषा है तभी यह विश्व की नम्बर- वन भाषा है। विश्वभर के सभी भाषा मर्मज्ञों, समीक्षकों, विद्वानों से विनम्र अनुरोध है कि भाषा जो दो ह)ृदयों को जोड़ती हैको हर प्रकार की राजनीति से दूर रखें। भाषा का संबंध मनुष्य कसे है (, मानव दिल से सबसे जुड़ता है और हिन्दी दिल की भाषा है। तभी हिन्दी सबको अपनी लगती है और यह जिसके भी संपर्क में आती है वह उसे अपनाता है। हिन्दी भावात्मकता और व्यावहारिकता की भाषा है। हिन्दी को चाहे कोई अपनाए या नहीं किंतु यह जिसके भी संपर्क में यह आती है उसकी बन जाती है। इसे किसी का भय नहीं, कोई आतंक नहीं। जो भी इसे अपनाता है यह उसकी हो जाती है। 'हिन्दी', तो वह सूत्र है जो सभी भाषा - को साथ लेकर चलती है। यह सबको रंगों के फूलोंजोड़ती है, तोड़ती नहीं तभी आज सोशियल मीडिया की सशक्त भाषा है, रीलों, यूदेखी जाती है। यह कबीरदास-ओडियो में हिन्दी ही सुनी-ट्यूब वीडियो-, विद्यापति की भाषा है। मिट्टी की उपज है और अब रोजीषा है और रोटी की भाषा है। हिन्दी भारत की अपनी भा-कण-राष्ट्रीयता इसके कण में है। जब कोई भारतीय, भारत के बाहर विदेश जाता है तो वह अपनी मातृभाषा नहीं देश की भाषा के द्योतक के रूप में हिन्दी ही बोलता है। विदेश में वह पहले भारतीय है फिर किसी राज्य का। इस सत्य से कोई अनभिज्ञ नहीं। लेकिन कोई स्वीकार नहीं करता। अब समय आ गया कि हम समझें कि राष्ट्र निर्माण का यदि कोई तत्व इस देश में है तो वह है 'हिन्दी' भाषा । अन्य सभी स्रोत राष्ट्र को तोड़ने का काम करते हैं जोड़ने का नहीं। आइए हम सब 'हिन्दी' की इस ताकत को समझे, अपने सभी पूर्वाग्रहों को परे रख राष्ट्रहित का संकल्प लें ।

****